ऑज़ का जादूगर

एल. फ्रैंक बाउम की कथा पर आधारित

चित्रः एग्नस मैकब्राइड

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ऑज़ का जादूगर

एल. फ्रैंक बाउम की कथा पर आधारित

चित्रः एग्नस मैकब्राइड

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक समय डॉरथी नाम की एक लड़की थी, जो अपनी मौसी एम, मौसा हैनरी और उनके कुत्ते टोटो के साथ कैनसास के मैदानी इलाके में रहती थी।

एक दिन जब घर में सिर्फ डॉरथी और टोटो थे, ज़बरदस्त तूफ़ान आया और उनको घर समेत उड़ा कर एक अजीबो-ग़रीब देश में ले गया।

"मैं कहाँ हूँ?" डॉरथी ने अगल-बगल झाँकते पूछा।

"तुम ऑज़ देश के पूर्वी हिस्से में हो जहाँ मंचकिन रहते हैं," सामने खड़ी एक छोटी-सी महिला ने कहा। "पूरब की दुष्ट चुड़ैल को मार डालने का शुक्रिया।"

डॉरथी उलझन में पड़ गई। उसे मालूम था कि उसने किसीको मारा ही नहीं था।

उस छोटी-सी महिला ने डॉरथी को रुपहले जूतों वाले दो पैर, उसके घर के नीचे दिखाए। वह चुड़ैल घर के नीचे कुचल की मर गई थी।

"ये जादूई जूते हैं," उस छोटी महिला ने कहा, "और अब तुम्हारे हैं।"

डॉरथी ने जूते पहने। "मेरा नाम डॉरथी है," उसने तहज़ीब से कहा। "आप कौन हैं?"

मैं उत्तर की भली चुड़ैल हूँ," महिला ने जवाब दिया। "और मेरी बहन दक्षिण की भली चुड़ैल है। पूरब और पश्चिम की दुष्ट चुड़ैलें हमारी दुश्मन हैं। शुक्र है तुम्हारा कि अब उनमें से एक मर चुकी है!"

डॉरथी खुश थी कि वह मदद कर सकी थी, पर अब वह बिना कुछ और किए घर लौटना चाहती थी। "मैं कैनसास कैसे लौट सकती हूँ?" उसने भली जादूगरनी से पूछा।

"तुम पन्ना नगर में जाकर ऑज़ के जादूगर से मिलो," भली जादूगरनी ने सुझाया। "तुम सीधे पीली ईंटों वाली सड़क पर बढ़ती जाओ।"

डॉरथी की रक्षा के लिए एक जादुई चुम्मा दे भली चुड़ैल गायब हो गई।

डॉरथी ने साफ कपड़े पहने और टोटो के साथ चल पड़ी।

जल्द ही उन्हें एक बिजूका मिला। "तुम लोग कहाँ जा रहे हो?" उसने पूछा।

जब डॉरथी ने बताया तो बिजूका बोल उठा, "अरे मेहरबानी से मुझे भी साथ ले चलो। मेरे सिर में भूसा भरा है, और मैं जादूगर से कहना चाहता हूँ कि वह मुझे एक दिमाग दे दे।"

"ठीक है," डॉरथी ने बिजूका को उसकी लम्बे डंडे से उतारते हुए कहा।

सो, अब डॉरथी, टोटो और बिजूका साथ-साथ चल रहे थे। कुछ ही दूर बाद उन्हें जंगल में काम करता एक लकड़हारा मिला। वह पूरी तरह टिन से बना हुआ था।

जब डॉरथी और बिजूका ने उसे बताया कि वे कहाँ जा रहे हैं, लकड़हारे ने कहा कि वह भी साथ चलना चाहता है। उसने साफ किया कि पूरब की दुष्ट जादूगरनी ने उसका दिल चुरा उसे टिन का बना दिया था।

गुर्रर्रर्र ! एक बड़ा सा शेर उनके सामने कूदा। डॉरथी चौंक गई, उसने शेर की नाक पर कस कर एक तमाचा जड़ा। "यों अपनी धौंस न जमाओ!" उसने शेर को डपटा। "माफ़ी चाहता हूँ, मैं धौंस जमाने का नाटक इसलिए करता हूँ क्योंकि सब मुझसे यही उम्मीद करते हैं। पर सच तो यह है कि मैं भारी डरपोक हूँ। शायद जादूगर मुझे ज़रा-सा बहादुर बना सके।"

वे सब साथ चलने लगे और जल्द ही अच्छे दोस्त बन गए।"

आख़िरकार वे पन्ना नगर में पहुँचे। एक छोटे कद का हरा आदमी उनके स्वागत में आया।

"हम जादूगर से मिलने आए हैं," डॉरथी ने अचंभे से चारों ओर देखते कहा। वहाँ सब कुछ हरा था - आकाश भी!

उस छोटे कद वाले आदमी ने सबको हरे रंग के चश्मे दिए और डॉरथी को पहनने के लिए एक हरी पोशाक भी। तब वह उन्हें महल में ले गया।

"जादूगर आप सबसे एक-एक कर मिलेंगे," महल के पहरेदार ने कहा। "डॉरथी सबसे पहले जा सकती है, क्योंकि उसने रुपहले जूते पहने हैं।"

महल में डॉरथी को सिंहासन कक्ष में ले जाया गया। उसने एक बड़े से सिंहासन पर एक विशाल गंजा सिर देखा जिसका न शरीर था न हाथ-पैर।

"मैं महान जादूगर हूँ," एक किंकियाती आवाज़ ने कहा, "तुम कौन हो?"

"मैं डॉरथी हूँ, और मैं कैनसास में अपने घर वापस जाना चाहती हूँ।"

"तुम्हें ये जूते कहाँ से मिले?" जादूगर ने पूछा।

डॉरथी ने उसे बताया कि पूरब की दुष्ट चुड़ैल कैसे मारी गई थी।

"फिर तो तुम्हें कैनसास लौटने से पहले पश्चिम की दुष्ट चुड़ैल को भी मारना होगा!" जादूगर ने किंकिंया कर कहा।

बारी-बारी डॉरथी के दोस्त भी अन्दर गए। जादूगर हरेक को किसी फर्क आकार में दिखा। पर उसका जवाब हर बार एक ही थाः

''तुम्हारी इच्छा तब पूरी होगी जब दुष्ट चुड़ैल मर जाएगी।''

''हमें वही करना होगा जो वह कह रहा है, नहीं तो मैं अपनी बहादुरी पा ही नहीं सकूंगा,'' शेर ने उदास हो कहा।

''न मैं अपना दिमाग,'' बिजूका बोला।

''न मैं अपना दिल,'' टिन के लकड़हारे ने कहा।

''और मैं कभी कैनसास नहीं लौट सकूंगी,'' डॉरथी सुबकी। कोई चारा न पा सब पश्चिम की चुड़ैल को तलाशने निकले।

पश्चिम की चुड़ैल ने सुन लिया था कि डॉरथी और उसके दोस्त उसे मारने आ रहे हैं। उसने उन सबको मरवाने के लिए खूंखा़र भेड़िए भेजे।

डॉरथी पकड़ ली गई, पर भली चुड़ैल की जादुई चुम्मी के कारण उसे कोई नुकसान न पहुँचा सका।

सो दुष्ट चुड़ैल ने उसे फर्श रगड़ने-पोंछने पर मजबूर किया। डॉरथी इस बात से नाराज़ हुई और उसने दुष्ट चुड़ैल पर पानी फेंका।

"नहीं!" चुड़ैल चीखी। "पानी मुझे मार डालेगा!" और वह पिघलने लगी और पानी की छोटी गड़ही में बदल गई।

दुष्ट चुड़ैल मर चुकी थी!

जब डॉरथी और उसके दोस्त वापस पन्ना नगर पहुँचे, उन्हें महल में कहीं भी जादूगर नहीं मिला।

"तुम्हें क्या चाहिए?" एक आड़ के पीछे से एक किंकियाती आवाज़ ने पूछा।

"हमने दुष्ट चुड़ैल को मार डाला है! हम चाहते हैं कि अब तुम अपना वादा निभाओ," डॉरथी ने कहा।

"मुझे इस बारे में कुछ सोचना होगा। तुम सब कल लौटो," किंकियाती आवाज़ ने जवाब दिया।

यह सुनते ही शेर गुस्से में ज़ोर से दहाड़ा। टोटो इस कदर चौंक गया कि वह उछला और जादूगर जिस आड़ के पीछे छिपा था वह गिर गई।

अब सबको आड़ के पीछे एक ठिगना-सा बूढ़ा आदमी दिखा जो बेहद डरा हुआ था।

वह कोई असली जादूगर नहीं था। वह तो सिर्फ एक दयालु आदमी था। उसने भरसक मदद करने का वादा किया।

उसने सबसे पहले बिजूका की खोपड़ी में लकड़ी का बुरादा भरा। "अब तुम्हारे पास एक दिमाग है।"

तब उसने टिन के लकड़हारे के अन्दर एक रेशम से बना दिल लगा दिया और शेर को एक हरी दवा पिलाई ताकि वह बहादुर बन सके। सब खुश थे। जादूगर का जादू कारगर रहा था।

"यह कोई जादू था ही नहीं," ठिगने आदमी ने मन ही मन सोचा। "वे तो पहले से ही चतुर, दयालु और बहादुर थे। बस उन्हें यह पता नहीं था!"

बस डॉरथी ही थी जिसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी थी। “चलो अपन दक्षिण की भली चुड़ैल के पास जा पूछते हैं। शायद वह तुम्हारी मदद कर सके,” बिजूका ने कहा।

जब भली चुड़ैल ने डॉरथी की पूरी कहानी सुनी उसने कहा, “मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ पर तुम्हारे चले जाने के बाद बाकी लोगों का क्या होगा?”

“मुझे पन्ना नगर का बादशाह बनने को कहा गया है,” बिजूका ने फ़क्र से कहा।

“और पास ही में रहने वाले विंकियों ने मुझे अपना राजा बनने को कहा है,” टिन का लकड़हारा खुशी से बोला।

“और मैं तो जंगल का राजा बनूंगा,” शेर ने गमकते हुए कहा।

"पर मेरा क्या होगा?" डॉरथी ने जानना चाहा।

"तुम्हारे पास तो जादूई जूते हैं," भली चुड़ैल ने जवाब दिया। "तुम्हें तो सिर्फ उनसे कहना है कि तुम कहाँ जाना चाहती हो।"

"मतलब मैं पहले ही दिन घर लौट सकती थी!" डॉरथी बोली।

"पर तब तुम हमसे नहीं मिल पातीं!" बिजूका, लकड़हारे और शेर ने कहा। डॉरथी अपने दोस्तों को देख मुस्कुराई, उन्हें गले लगाया।

"अलविदा!" डॉरथी बोली, "मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगी।" तब टोटो को उठा उसने कहा, "मुझे कैनसास वापस ले चलो।

पल भर में, डॉरथी, एम मौसी के बाग में थी।

"अरे तुम कहाँ से टपक पड़ीं?" मौसी ने अचरज से भर पूछा।

"ऑज़ के देश से," डॉरथी ने हंसते हुए अपनी मौसी को चूमा। "ओह मैं घर वापस लौट कर कितना खुश हूँ।"

यह कहानी कालातीत लोक व परी कथाओं में एक है, जिनके साथ बच्चों की अनेक पीढ़ियाँ बड़ी हुई हैं। ये बच्चों को हमेशा से पसन्द आती रही हैं। इस कहानी का सरल पुनर्कथन और रंग-बिरंगे लुभावने चित्र, मूल कथा के जादू को बरकार रखते हैं।